SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल के कथा साहित्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

नीतू द्विवेदी, शोधार्थी, हिन्दी साहित्य,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, जिला ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
नीतू द्विवेदी, शोधार्थी, हिन्दी साहित्य,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर,
जिला ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 02/12/2019
Revised on : -----
Accepted on : 06/12/2019
Plagiarism : 02% on 02/12/2019

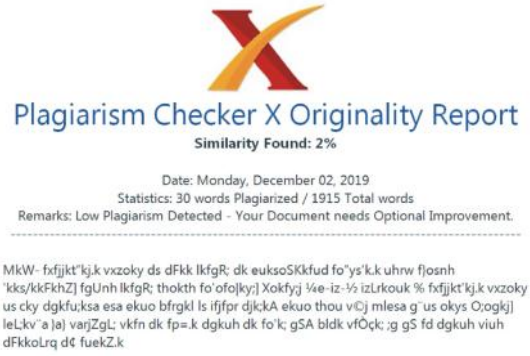
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Monday, December 02, 2019
Statistics: 30 words Plagiarized / 1915 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

MkW- fxfjjkt"kj.k vxzoky ds dFkk lkfgR; dk euksoSKkfud fo"ys'k.k uhrw f)osnh 'kks/kkFkhZ] fgUnh lkfgR; thokth fo'ofo|ky;] Xokfyj ¼e-iz-½ izLrkouk % fxfjjkt"kj.k vxzoky us cky dgkfu;ksa esa ekuo bfrgkl ls ifjfpr djk;kA ekuo thou v©j mlesa g"us okys O;ogkj leL;kv"a)a) varjZgL; vkfn dk fp=.k dgkuh dk fo'k; gSA bldk vfÒçk; ;g gS fd dgkuh viuh dFkkoLrq d¢ fuekZ.k

प्रस्तावना :–

गिरिराजशरण अग्रवाल ने बाल कहानियों में मानव इतिहास से परिचित कराया। मानव जीवन और उसमें होने वाले व्यवहार, समस्याओं द्वंद्व अंतर्रहस्य आदि का चित्रण कहानी का विषय है। इसका अभिप्राय यह है कि कहानी अपनी कथावस्तु के निर्माण के लिए सामग्री का चयन जीवन और जगत् से करती है। डॉ. अग्रवाल ने अपनी कहानियों के कथ्य का चुनाव समाज से ही किया है। इन कहानियों में मानव–जीवन की जिज्ञासा और परिवार के बनते–बिगड़ते संबंध, समस्याएं कहीं भी देखे जा सकते हैं। डॉ. अग्रवाल की कहानियों का कथ्य सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक घटनाओं के आसपास घूमता है। डॉ. अग्रवाल के कथा साहित्य के कथ्य का विश्लेषण इसी पृष्ठभूमि में किया जा सकता है।

मुख्य शब्द :–

कथा साहित्य, द्वंद्व, मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान और साहित्य मानव को इस संसार की अनमोल कृति माना जाता है। मानव ने अपने मस्तिष्क के बल पर संसार के हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के दर्शन कराएँ हैं। उसने धर्म तथा अध्यात्म के साथ–साथ विज्ञान के क्षेत्र में भी ऊँची छलांग लगाई है। आज का युग विज्ञान का युग कहा जाता है। विज्ञान को अपनाने के कारण मनुष्य को जीवन के प्रति देखने का वैज्ञानिक नजरिया प्राप्त हुआ। इसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण मनुष्य ने अपने आंतरिक तथा बाह्य सभी बातों में क्रांति का बीज बोया। पहले हमारा जीवन धर्म तथा अध्यात्म से क्रियान्वित होता था लेकिन विज्ञान की खोज के साथ हमारा संपूर्ण जीवन विज्ञानमय हो गया है । आज ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में अनेक नई शाखाओं

का उदय हुआ है। 16वीं शति में खगोलशास्त्र, भूगोल तथा शरीर शास्त्र की प्रधानता थी तो 17वीं शतीं में रसायन तथा भौतिक शास्त्र का और 18 वीं शताब्दी में अर्थविज्ञान तथा राजनीति विज्ञान का प्रभाव प्रत्यक्ष रुप से जीवन पर दिखाई देता है। 19 वीं शताब्दी में समाजशास्त्र और प्राणीशास्त्र का विकास अधिक तीव्रता से हुआ है।

डॉ. अग्रवाल की कहानियों के कथ्य जीवन की घटनाओं से जुड़े हुए हैं। वे दैनिक जीवन की वास्तविकता को उजागर करते हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में आधुनिक जीवन की घटनाओं का बड़ी ही बारीकी और सूक्ष्मता के साथ वर्णन किया है। कहानियों के कथ्य नए हैं, उनके विषय नए हैं और संदर्भ भी नए हैं। डॉ. अग्रवाल की कहानियां मानव–जीवन की घटनाओं से जुड़ी हुई नज़र आती हैं। इन कहानियों में परिवार है, परिवार का विघटन है, टूटन है, समाज की भ्रष्ट व्यवस्था का साक्षात्कार है। डॉ. अग्रवाल मध्यमवर्गीय परिवार से भली–भांति परिचित हैं अतः उनकी कहानियों में इनसे जुड़ी घटनाओं का संजीवता से अंकन हुआ है।

गिरिराजशरण अग्रवाल जी ने बाल मनोविज्ञान को अपने साहित्य में बड़े ही सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया है। बाल सुलभ मन–मस्तिष्क में चल रही, उठ रहीं भावनाओं को साहित्य में पिरोने का कार्य हर किसी के बस की बात नहीं है। मनोविज्ञान के प्रकारों में बाल मनोविज्ञान को समझने की चेष्टा लेखक द्वारा की गई है। जिसके अंतर्गत उन्होंने कहानियां, नाटक इत्यादि अपने साहित्य में समाहित किया है।

गिरिराजशरण अग्रवाल जी अध्यापक पहले हैं, लेखक बाद में। बच्चों को पढ़ाने का अनुभव उनमें है साथ ही बच्चों की भावनाओं, उनका मनोविज्ञान समझने की असीम शक्ति का भण्डार उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अध्यापक अनुशासनप्रिय होता है। बच्चों को अनुशासन, अध्ययन सिखाते–सिखाते अग्रवाल जी का साहित्य नियमों की पुस्तक से बँधी–टँकी ज़िंदगी, अनुशासन, आलोचना–समालोचना, शोध, संपादन और ऐसी ही इतर विधाओं के लिए तो सटीक बैठता है, किंतु लेखक ललित साहित्य के मामले में थोड़ी भौंहें टेढ़ी ही रखने को कोशिश करता है। कारण गल्प, गल्प ही है और सत्य शीर्षस्थ। यह अनुशासन उनके व्यक्तित्व, संबोधन एवं चरित्र का प्रतीक बन जाता है।

'**आओ अतीत में चलें**' बच्चों को सरल और रोचक भाषा में मानव–विकास की अब तक की गाथा बताती है उपन्यास के रूप में लिखी गई इस लंबी कहानी का हीरो बच्चों को दूर अतीत में वहाँ ले जाता है, जहाँ से आदिमानव ने अपना इतिहास आरंभ किया था। इसमें एक वृद्ध व्यक्ति कस्बे की चौपाल पर प्रतिदिन भोर होते ही उपस्थित होता है और चौपाल पर इकट्ठे हो गए बच्चों को बताता है कि मानव ने किस प्रकार अपना पेट भरने के लिए अन्य जानवरों का शिकार करने हेतु पहले पत्थर और फिर धातु के हथियार बनाए, किस प्रकार बोलना सीखा और किस प्रकार लिखना सीखा। यह उपन्यास बच्चों को मानव–विकास की पूरी कहानी बताती है। यह कहानी बच्चों के मस्तिष्क को तार्किक बनाने के लिए भी उपयोगी है।

उनकी मानव इतिहास से संबंधित कहानियों में बच्चों की जिज्ञासा को जिस ढंग से उकेरा है उसे कहानी के पात्र **विक्रम दा** ने शांत किया है।

उदय आदिमानव का कहानी के पात्र विक्रम दा बड़े ही ज्ञानी आदमी थे कंधे पर किताबों का झोला डाले भ्रमण करते रहते. कभी यहाँ हैं तो कभी वहाँ। घूमना और पुस्तकें पढ़ना दो ही काम थे विक्रम दा को। सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त कर लोग या तो बैठकर पेंशन खाते हैं, या संन्यास ले लेते हैं, पर विक्रम दा ने ऐसा नहीं किया था। वह अपना सारा समय अध्ययन करने या घूमने में लगाते । वे बच्चों को प्रिय थे। लंबा कुर्ता, पायजामा, लंबी सफ़ेद दाढ़ी। बड़ी–बड़ी प्रतिभाशाली आँखों पर चमचमाता हुआ चश्मा। खुला–खुला माथा और लंबे बाल। ऐसे थे हमारे जगत दादा विक्रम दा। वह बंगाली नहीं थे, फिर भी उनके नाम के साथ '**दा**' शब्द जुड़ गया था। जैसे बच्चे अक्सर मास्टर साहब को 'मास साब' और डॉक्टर साहब को जल्द में 'डाक साब' कहने लगते हैं, इसी तरह बच्चे बड़े विक्रम दादा को विक्रम 'दा'

कहकर पुकारने लगे थे।

विक्रम दा ने आदिमानव का विस्तृत परिचय देते हुए बच्चों से कहा, 'हड्डी और पत्थरों के सीधे–सादे हथियार ही आदिमानव के विकास का पहला क्रांतिकारी अध्याय है। आदिमानव के जीवन में सबसे चमत्कारी चीज़ आग थी। आग से उसके जीवन में बहुत बड़ा क्रांतिकारी मोड़ आया। आदिमानव आग से डरता था। जब कभी बाँस से बाँस या वृक्ष टकराता और वन में आग लग जाती तो आदिमानव भय से काँप उठता। तेज़ वर्षा में बादलों के टकराने से बिजली चमकती या उसके गिरने से आग लग जाती तो आदिमानव उसकी चमक और तपन से भयभीत हो उठता। आदिमानव आग को दैवी–प्रकोप मानता था।'

इस प्रकार बच्चों के मन में इस कहानी से जो जिज्ञासा पनपी उसे विक्रम दा ने बड़ी ही सहजता से शांत किया। बच्चों के मन में उठे मनोभावों को विक्रम दा ने आदि मानव की अनेक कहानियां सुनाकर पाषाण युग से वर्तमान युग तक उनकी सभी जिज्ञासाओं को शांत किया। डॉ. अग्रवाल ने इन कहानियों में बाल मनोविज्ञान को जिस प्रकार उकेरा है वह अद्‌भुत है।

डॉ. अग्रवाल ने गूँगी बच्ची रमा, तबादला, एक शहर इक्कीसवीं सदी का, तांत्रिक और अँगूठी, सुबह का भूला, रोशनी की लकीरें, सुचेता बहन जी, वाटर बॉक्स, संतू जेबकतरा, घर में पेड़ बादाम का, राजू और तमंचा, दलदल, एक बाघिन एक गाय, बालक और हाथी, सबसे बड़ा रुपैया आदि कहानियों में बालमन को छुआ है।

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। निरन्तर हो रही नयी–नयी खोजे बाल मन को प्रभावित करती रहती है वह कल्पना लोक में विचरण करता रहता है। आज तो बाल साहित्य की प्रकृति यथार्थ के धरातल से जुड़ी हुई है। विज्ञान के आविष्कारों की कथाओं को सरलतम भाषा शैली में परिवर्तित कर बालकों के ज्ञान के विकास के लिए प्रस्तुत किया जाता है। यहां तक कि पशु पक्षियों, चांद–तारों, परियों आदि की कथाओं में भी परिवर्तन कर उन्हें वास्तविक जीवन और जगत के संदर्भ में प्रस्तुत किया जा रहा हैं। आज भी बाल कविताओं में कम्प्यूटर, आंतरिक्षयान, डाइंगरूम के साथ आज के महानगरीय जीवन में परिवेश के चित्र भी मिलते है। सच तो यह है कि आज के बाल साहित्य में बालमन को छूने की भरपूर क्षमता है। समकालीन वैज्ञानिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप बच्चें यान्त्रिक माहौल के अधिक करीब हुए है।

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है और इस युग में बच्चे पौराणिक कथा कहानियों के द्वारा अंधविश्वासों से ऊपर उठकर विज्ञान और वैज्ञानिक सोच के ज्यादा करीब आ रहे हैं और एक ऐसे वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं, जहाँ विज्ञान ने अपनी चमत्कारिक शक्ति से एकदम असंभव लगती चीजों को भी संभव कर दिखाया है। जीवन में विज्ञान का महत्व बढ़ जाने के कारण वैज्ञानिक तथ्यों तथा उपकरणों के प्रति हमारा रागात्मक सम्बन्ध स्थापित हो रहा है। इसका परिणाम यह हुआ कि जो विज्ञान हमें नीरस लगता था अब वह सरस प्रतीत होने लगता है तथा अपनी प्रक्रिया से वह सम्वेदना पैदा करने लगता है। सम्वेदना ही साहित्य का आधार होता है। यदि वैज्ञानिक जानकारी सम्वेदना के आधार पर दी जाय तो वह न केवल चिरस्थायी होगी बल्कि साहित्य के आस्वाद के नये द्वार भी खुलेंगे तथा बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास भी होगा। विज्ञान साहित्य बच्चों के अंधविश्वास को तोड़कर और सत्य को वास्तविक रूप में परखने के लिए वैज्ञानिकता की प्रवृत्ति उत्पन्न कर रहा है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी बाल–कथा साहित्य में विज्ञान परता व वैज्ञानिक प्रवृत्ति का यथेष्ट सन्निवेष है।

अतः बालमनोविज्ञान द्वारा बालसाहित्य को गति मिल रही है मनोविज्ञान के कारण ही बालसाहित्य अधिक रुचिकर होता जा रहा है और यह बालमन को पूरी तरह प्रभावित कर रहा है आज का युग में बच्चे फोन और इन्टरनेट के माध्यम से ही अपना ज्ञान बढ़ाते और मनोरंजन करते हैं।

वस्तुतः कहा जा सकता है कि हिन्दी बालकथा साहित्य में विभिन्न प्रवृत्तियाँ यथा–मनोवैज्ञानिकता, पौराणिकता, धार्मिकता वैज्ञानिकता, काल्पनिकता, परिचयात्मकता सामाजिकता पाई जाती है, जो बच्चों में

विभिन्न जानकारियाँ प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होती हैं। बच्चों को विभिन्न स्तर की जानकारी प्राप्त करने के लिए बालकथा साहित्य सर्वोत्तम माध्यम सिद्ध हुआ। आज के समय में बाल साहित्य के द्वारा बालक अपनी स्वयं की रचनाएं और कहानियों को लिखने लगा है और उनकी रचनाएं और कहानियाँ समाचार पत्र और पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी हैं। अतः बाल साहित्य को पढ़ने वाले स्वयं ही लेखन करने लगे हैं।

निष्कर्ष :–

''बच्चा एक जड़ जीव नहीं है जिसने सब कुछ पहले ही सीखा है। मानो वह कोई खाली बर्तन हो जिसे हम भर देते हैं। न ही बच्चा ही आदमी को बनाता है। प्रत्येक आदमी का निर्माण उसी बच्चे द्वारा होता है जो वह अपने बचपन में था।''

यह उक्ति गिरिराजशरण अग्रवाल जी की समस्त बाल कहानियों में दृष्टिगोचर होती है। गिरिराजशरण अग्रवाल की बाल कहानियों में मानव इतिहास तथा बाल कहानियों में प्रेरणा, आत्मविश्वास, अंधविश्वास आदि मानव जीवन और उसमें होने वाले व्यवहार को समझाते हुए बड़ी सुंदर युक्ति से भाषा शैली पर पकड़ की है। बाल कहानियों के मनोविज्ञान को समझते एवं समझाते हुए डॉ. अग्रवाल जी ने अपनी शैली को व्यंगात्मक दृष्टि से भी बालमन को छुआ है।

डॉ. अग्रवाल ने बाल कहानियों में संदेश का प्रसार करते हुए बालमन के उस कोने को छुआ है जहां उनमें कोमल संवेदना पुष्पित एवं पल्लवित होती हैं। बाल मनोविज्ञान को समझने वाले डॉ. अग्रवाल जी ने बच्चों के लिए जो रचा है वह अद्‌भुत एवं अकथनीय है। कहानी के पात्र हों या फिर उसकी भाषा सब पर पकड़ जमाते हुए डॉ. अग्रवाल जी ने समाज के प्रत्येक परिवार में जैसे स्वयं रहते हुए वहां की परिस्थिति बाल सुलभ मन की जिज्ञासाओं को मनोवैज्ञानिक तरीके से इस प्रकार उकेरा है कि यदि कोई इनका साहित्य पढ़ ले तो फिर उसे बालमन को समझने की अधिक आवश्यकता नहीं रहती है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. *डॉ. कमलकिशोर गोयनका, डॉ. मीना अग्रवाल, (2016) : गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली बाल साहित्य समग्र, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर (उ.प्र.) संस्करण।*
2. *डॉ. हरीश कुमार सिंह सिंह डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, (2006) : व्यक्ति और साहित्य, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर (उ.प्र.)।*
3. *रॉबिन शॉ, जिज्ञासा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।*
4. *डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, (1994) जिज्ञासा, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।*
5. *राम अवध द्विवेदी, हिन्दी साहित्य के विकास की रूपरेखा।*
6. *मारिया माटेंसेसरी, बाल कला : एक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन (विशेष संदर्भ वनस्थली विद्यापीठ)।*

****